बातचीत

न. 05/2026 भारतीय थलसेना का प्रकाशन मई 2026

विशेष संस्करण

OPERATION SINDOOR

07-10 मई, 2025 : 88 घंटे जिन्होंने "नया सामान्य" स्थापित किया

सटीक हमले को याद करते हुए, संकल्प को फिर से याद करते हुए-अग्रिम मोर्चे से आवाजें

सवाई नाला, पीओजेके

सैयदना बिलाल, पीओजेके

कोटली अब्बास, पीओजेके

कोटली गुलपुर, पीओजेके

भीमबेर, पीओजेके

महमूना जोया, पाक

सरजाल, पाक

मुरीदके, पाक

बहावलपुर, पाक

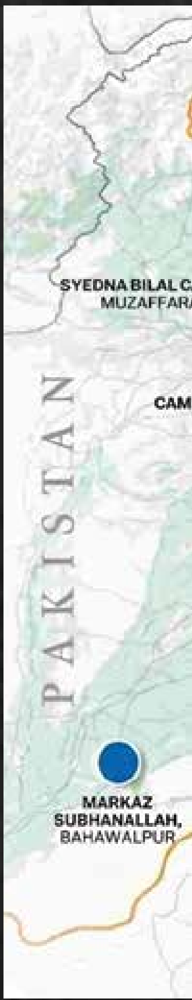

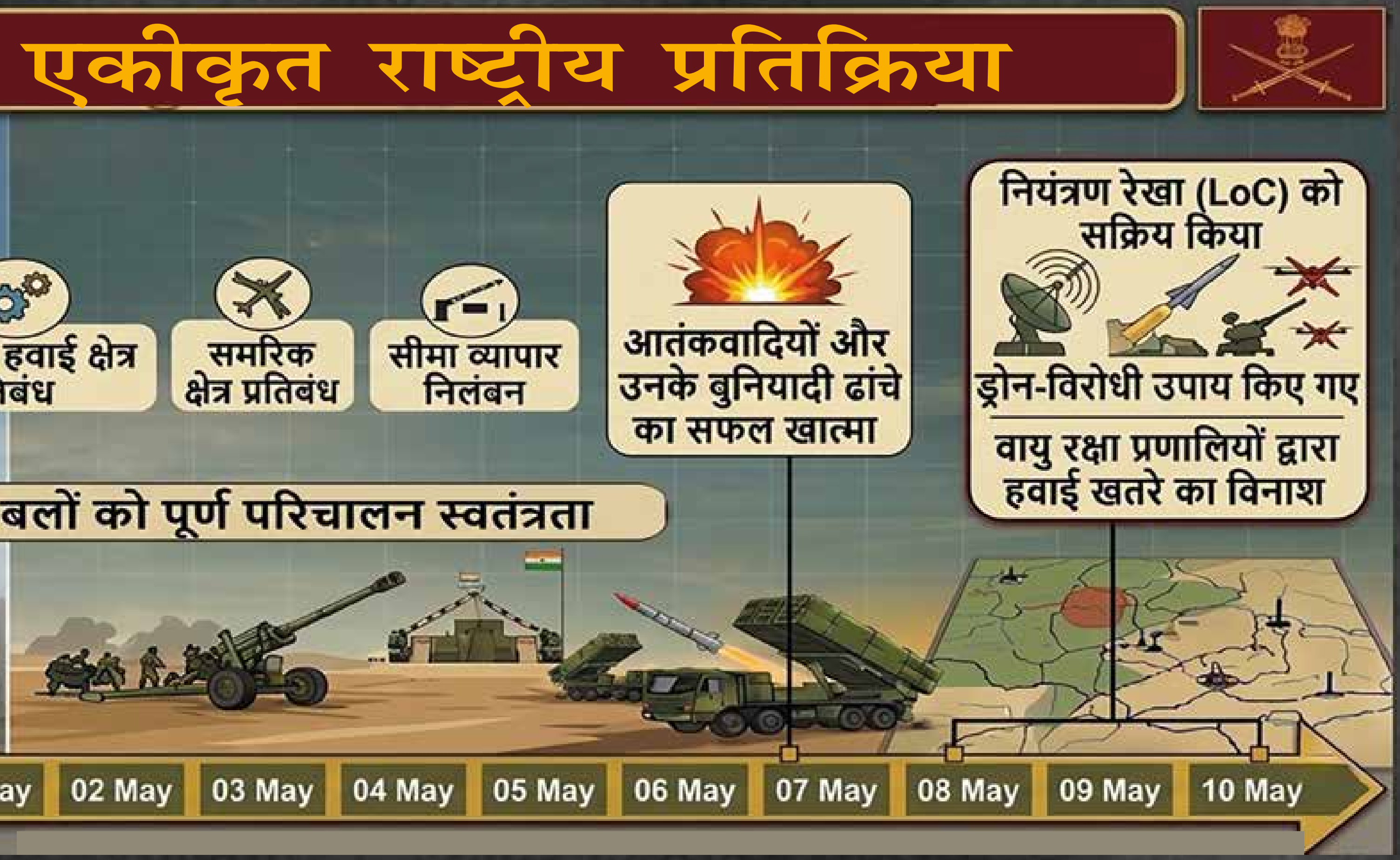
एकीकृत राष्ट्रीय प्रतिक्रिया
हवाई क्षेत्र
बंध
समरिक
क्षेत्र प्रतिबंध
सीमा व्यापार
निलंबन
आतंकवादियों और
उनके बुनियादी ढांचे
का सफल खात्मा
नियंत्रण रेखा (LoC) को
सक्रिय किया
ड्रोन-विरोधी उपाय किए गए
वायु रक्षा प्रणालियों द्वारा
हवाई खतरे का विनाश
बलों को पूर्ण परिचालन स्वतंत्रता
ay
02 May
03 May
04 May
05 May
06 May
07 May
08 May
09 May
10 May

नौ
ठिकाने
नष्ट
सात ठिकाने सेना द्वारा
SAWAI NALA CAMP,
MUZAFFARABAD
AMP,
ABAD
Srina
GULPUR
CAMP, KOTLI
ABBAS
P, KOTLI
BARNALA CAMP,
BHIMBER
MEHMONA
JOYA CAMP,
SIALKOT
Jammu
SARJAL CAMP,
NAROWAL
MARKAZ
TAIBA,
MURIDKE
Chandigarh
दो ठिकाने वायुसेना द्वारा
INDIA
New Delhi
Bikaner

सूचना क्षेत्र पर वर्चस्व
प्लेटफॉर्म
सोशल मीडिया
(ट्विटर, इंस्टाग्राम,
फेसबुक, यूट्यूब)
मोबाइल ऐप्स
(सार्वजनिक अपडेट,
अलर्ट)
सैटेलाइट संचार
(टीवी, रेडियो
प्रसारण)
वेबसाइट्स
(सरकारी और
रक्षा पोर्टल)
ईमेल और
एसएमएस
(बुलेटिन, परामर्श)
पॉडकास्ट और
डिजिटल ऑडियो
(सूचना प्रसार)
समाचार एजेंसियां
और वायर सेवाएं
सामुदायिक
नेटवर्क
(नागरिक और
स्थानीय जुड़ाव)
निरंतर
परिचालन अपडेट
0105 H
स्ट्राइक
0128 H
सोशल मीडिया
पोस्ट 1
0144 H
प्रेस विज्ञप्ति
0151 H
सोशल मीडिया
पोस्ट 2
0242 H
सोशल मीडिया
पोस्ट 3
1030 H
प्रेस
ब्रीफिंग

ऑपरेशन सिंदूर : सुवि

सैन्य संरचना

- उत्तर भारत क्षेत्र और एकीकृत युद्धक समूह का गठन पूर्ण
- सूचना युद्ध
  - सूचना संचालन समूह एवं टुकड़ियाँ
  - मनोवैज्ञानिक रक्षा प्रभाग
  - कमांड साइबर विंग
- भविष्य एवं रूपांतरण प्रकोष्ठ
  - रुद्र ब्रिगेड
  - भैरव बटालियन
  - शक्तिबाण रेजिमेंट
  - दिव्यास्त्र बैटरी
  - अश्नि ड्रोन प्लाटून
- इन्फैंट्री डिवीजन मुख्यालय, एविएशन ब्रिगेड एवं क्षेत्र का गठन और उन्नयन

संयुक्तता एवं एकीकरण

- एकीकृत परिचालन दृष्टिकोण
- सेवाओं के सामरिक से रणनीतिक स्तर तक एकीकरण की प्रक्रिया प्रगति पर है
- संयुक्त योजना – संयुक्त प्रशिक्षण – भूमिकाओं का संयुक्त कार्यान्वयन किया जा रहा है
- साझा कनेक्टिविटी ग्रिड हेतु संयुक्त संचार संरचना स्थापित
- संयुक्त लॉजिस्टिक्स नोड स्थापित किए जा रहे हैं
- मानव-युक्त और मानव-रहित टीमिंग पर संयुक्त मार्गदर्शिका, सैन्य साइबर स्पेस नीति और द्विभाषी संयुक्त स्टाफ सेवा कर्तव्य पुस्तिका जारी की गई है

चारित सुधार योजना

आधुनिकीकरण और प्रौद्योगिकी का समावेश

- रणक्षेत्र निगरानी प्रणाली
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर जोरः एकं एआईआस एवं प्रक्षेपण (सैन्य जलवायु विज्ञान)
- आंतरिक अनुप्रयोगः आसान, अनुमान, एकलव्य (कर्मयोगी), समर्थ
- रक्षा उत्कृष्टता के लिए नवाचार, सेना प्रौद्योगिकी बोर्ड और प्रौद्योगिकी विकास फंड परियोजनाएँ
- गोला-बारूद का स्वदेशीकरणः 90 प्रतिशत
- कम लागत, उच्च प्रौद्योगिकी
- ड्रोन का निर्माण (40,000)
- क्रायोजेनिक कूलर (दुनिया का चौथा देश)
- 3डी प्रिंटिंग और एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग

प्रणाली, प्रक्रियाएँ और कार्य

- व्यापार करने में सुगमताः समस्या परिभाषा विवरण 2025 और तकनीकी चुनौतियाँ 2025
- सेना साइबर समूह प्रमाणन
- आत्मनिर्भरताः 84 प्रतिशत अनुबंध और 98 प्रतिशत एओएन भारतीय उद्योगों को
- गणतंत्र दिवस परेडः प्रौद्योगिकी-सक्षम युद्ध संरचनाएँ
- इन्वेंट्री प्रबंधन हेतु कम्प्यूटरीकृत इन्वेंट्री नियंत्रण समूह सॉफ्टवेयर

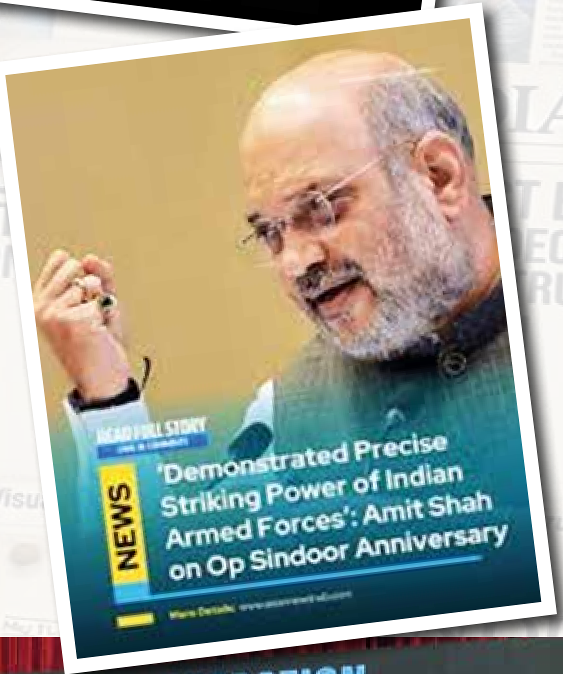

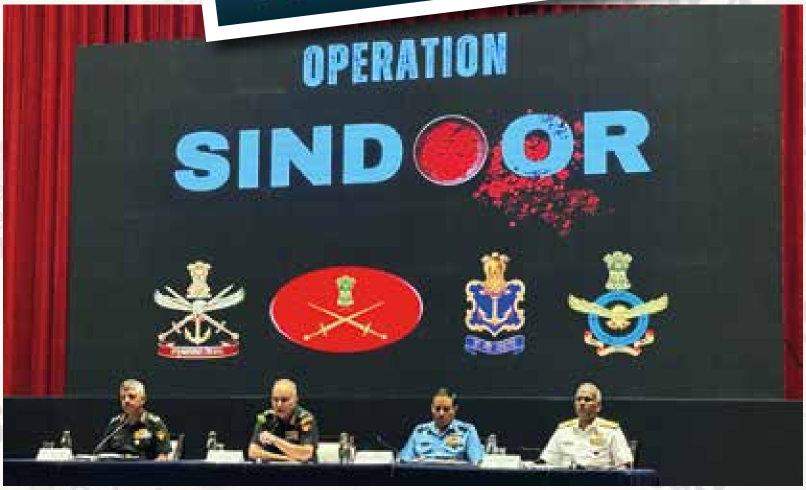

"सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि यह सूरत बदलनी चाहिए"

ऑपरेशन सिंदूर की पहली वर्षगांठ के अवसर पर, पूरे राष्ट्र ने अपनी प्रदर्शित तस्वीरें अपडेट करके एक सोशल मीडिया अभियान में हिस्सा लिया।

INDIA TODAY

INDIA NEWS

The Indian Express

WION

TV9

NEWS 18

मोर्चे से आवाजें : 07 मई 26

पारंपरिक युद्ध-पद्धति से तकनीक-आधारित युद्ध की ओर हुए बदलाव पर प्रत्यक्ष दृष्टिकोण।

"सवाई नाला - मुजफ्फरबाद एलओसी से 30 किमी दूर, प्रमुख लश्कर ए तैयबा प्रशिक्षण केंद्र"

सवाई नाला, लाइन ऑफ कंट्रोल से लगभग 30 किलोमीटर दूर, बहुत गहराई में छिपा हुआ था। दुश्मन को लगा कि इतनी ज्यादा दूरी और ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों की वजह से उन तक पहुँचना नामुमकिन है। एक स्पष्ट निशाना लगाने के लिए, हम घने अंधेरे में, बिना नक्शे वाली पहाड़ियों पर अपने भारी हथियार ऊपर तक ले गए। जब कमांड मिला, तो हमने ऊपर से उन पर जबरदस्त हमला बोल दिया। पहाड़ों की खड़ी दीवारें भी उन्हें हमारे बरसाए गए कहर से नहीं बचा सकीं। अपने नाइट-विजन स्कोप से हमने देखा कि उनका पूरा ठिकाना एक भड़कती हुई आग के दरिया में बदल गया। हमने यह साबित कर दिया कि वे चाहे कितनी भी गहराई में क्यों न छिप जाएँ, हमारी पहुँच उनसे कहीं ज्यादा लंबी है।

*- नायब सूबेदार सतनाम सिंह, भारतीय सेना **

"सैयदना बिलाल - मुजफ्फराबाद लश्कर ए तैयबा का हथियारों और विस्फोटक ट्रेनिंग का अड्डा"

सैयदना बिलाल मौत की एक फैक्टरी थी, जिसका इस्तेमाल नए रंगरूटों को भारी हथियारों और विस्फोटकों की ट्रेनिंग देने के लिए किया जाता था। हमने पूरी खामोशी से निशाना साधा, हमारे दिल पूरी तरह से हमला करने के इरादे से धड़क रहे थे। जब हमने गोलीबारी शुरू की, तो हमारा हमला इतना तेज और लगातार था कि वे पूरी तरह से हैरान रह गए। हमारी गोलियां निशाने पर लगीं, जिससे जबरदस्त धमाके हुए। जब उनके अपने हथियार फटने लगे, तो पूरी पहाड़ी दिन की रोशनी की तरह जगमगा उठी। हमने न सिर्फ उनकी ट्रेनिंग में रुकावट डाली, बल्कि उस इलाके में उनके पूरे वजूद को ही मिटा दिया।

*- लेफ्टिनेंट सचिन गोयल, भारतीय सेना **

"कोटली अब्बास - एलओसी से 13 कि.मी. दूर, लश्कर ए तैयबा के आत्मघाती हमलावरों की ट्रेनिंग का मुख्य केंद्र"

हमें ठीक-ठीक पता था कि एलओसी से 13 किलोमीटर दूर स्थित कोटली अब्बास में क्या दांव पर लगा है। यह लश्कर के फिदायीन - यानी उन आत्मघाती हमलावरों - की ट्रेनिंग का सबसे बड़ा केंद्र था, जिन्हें सीमा पार करके हमारी धरती पर हमला करने के लिए तैयार किया जा रहा था। हमने जो हमला किया, वह अचानक, जोरदार और बिना रुके होने वाला था। तबाही की उस अचानक हुई बारिश ने उन्हें पूरी तरह से बेनकाब कर दिया। हमने उस खतरे को पूरी तरह से खत्म कर दिया, और उन कायरों को हमारी धरती पर कदम रखने से पहले ही, वहीं के वहीं रोक दिया।

*- सूबेदार पवन कुमार, भारतीय सेना **

"कोटली गुलपुर - लश्कर-ए-तैयबा आतंकवादियों का ऑपरेशनल बेस"

कोटली गुलपुर एलओसी से 30 किलोमीटर पीछे स्थित था। यह उनकी लॉजिस्टिक्स (साजो-सामान) का धड़कता हुआ दिल था, जो पूरे इलाके में मौजूद आतंकी गुटों को रसद पहुँचाता था। हमने एक जोरदार और लगातार हमला जारी रखा, और एक-एक करके उनकी संचार लाइनों, ईंधन के भंडारों और बुनियादी ढांचे को तबाह कर दिया। हमारे हमलों की वह लगातार गूंज तब तक नहीं रुकी, जब तक कि पूरा का पूरा परिसर मलबे में तब्दील नहीं हो गया। हमने एक साफ संदेश दिया: अगर तुम आतंकवाद का साथ दोगे, तो हम तुम्हें टुकड़े-टुकड़े करके खत्म कर देंगे।

*- हवलदार बलराम पटेल, भारतीय सेना **

(* नाम बदल दिए गए हैं)

मोर्चे से आवाजें : 07-08 मई 26

पारंपरिक युद्ध-पद्धति से तकनीक-आधारित युद्ध की ओर हुए बदलाव पर प्रत्यक्ष दृष्टिकोण।

"भिम्बर - आईईडीएस के लिए ट्रेनिंग सेंटर"

भिम्बर एलओसी से सिर्फ 9 किलोमीटर दूर एक बहुत बड़ा खतरा था। कंक्रीट से बने उस मजबूत किले जैसी जगह के लिए, हमने पूरी ताकत से हमला किया। हमने अपने हमले को इस तरह से प्लान किया कि एक ही पल में, बहुत बड़ी मात्रा में बारूद की ताकत उस जगह पर एक साथ जाकर टकराई। हमारे पैरों के नीचे जमीन जोर से काँप उठी। उस जबरदस्त और कुचल देने वाले असर ने टारगेट को पूरी तरह से धूल में मिला दिया। भिम्बर से बम का खतरा हमेशा के लिए खत्म हो गया।

*- नायक पूरन, भारतीय सेना **

"मेहमोना जोया - हिजबुल मुजाहिदीन कैंप"

मेहमोना जोया अंतर्राष्ट्रीय सीमा से 12 किलोमीटर पीछे स्थित था, और लंबे समय से हिजबुल मुजाहिदीन के लिए एक सुरक्षित पनाहगाह के तौर पर काम कर रहा था। हम काफी पीछे तैनात थे, और अपनी आक्रमकता को सटीक कोऑर्डिनेट्स के जरिए उन पर बरसा रहे थे। धमाकों की गूंज इतनी जोरदार थी कि कान सुन्न हो रहे थे। हम पूरी रफ्तार और जोश के साथ उनके ठिकाने पर भारी-विस्फोटक गोले बरसा रहे थे। जब तक धूल छंटी, हिजबुल का पूरा इलाकाई ढांचा जलकर खाक हो चुका था। सिर्फ धुआँ उठता हुआ, गड्ढों से भरा एक वीरान मैदान बचा था।

*- सूबेदार राजिंदर कुमार, भारतीय सेना **

"सरजल - आतंकवादी ट्रेनिंग कैंप"

मेरे जवानों के लिए, सरजल पर किया गया यह हमला बेहद निजी मामला था। अंतर्राष्ट्रीय सीमा से महज 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित, इस मजबूत लॉन्चपैड में वही आतंकवादी गुट छिपा हुआ था, जिसने हमारे चार बहादुर पुलिसकर्मियों की कायरतापूर्ण हत्या की थी। उन्हें लगा था कि उनके मजबूत बंकर और जमीन के नीचे बनी सुरंगें उन्हें सुरक्षित रखेंगी, लेकिन हमने अपने आक्रोश के साथ जोरदार और लगातार हमलों से उनका यह भ्रम तोड़ दिया। धमाकों की जबरदस्त गूंज और झटकों से उनके ठिकाने ढह गए, और वे मलबे के नीचे दबकर रह गए।

*- हवलदार आशुतोष कुमार, भारतीय सेना **

"वह रात जब हमने आसमान को थाम लिया"

07/08 मई 2025 की रात, क्रीक इलाके में तैनात, नायब सूबेदार पुष्पराज प्रसाद मिश्रा की एयर डिफेंस टुकड़ी को सीमा पार दुश्मन को हुए भारी नुकसान के बाद हाई अलर्ट पर रखा गया। सीमा पार से एक दुश्मन यूएएस (ड्रोन) को हमारी तरफ आते हुए देखा गया। जैसे ही यह पक्का हो गया कि वह दुश्मन का है, उसे मार गिराने का आदेश दिया गया। हमारे पास मौजूद आधुनिक एडी (एयर डिफेंस) तोपों की मदद से, हमने कुछ ही पलों में उस लक्ष्य को पहचानकर, उस पर नजर जमाकर, उसे पूरी तरह नष्ट कर दिया। यह सब बहुत तेजी से, सटीक तरीके से और पूरी तरह हमारे नियंत्रण में हुआ।

*- नायब सूबेदार पुष्पराज प्रसाद मिश्रा, भारतीय सेना **

(* नाम बदल दिए गए हैं)

मोर्चे से आवाजें : 08-09 मई 2026

पारंपरिक युद्ध-पद्धति से तकनीक-आधारित युद्ध की ओर हुए बदलाव पर प्रत्यक्ष दृष्टिकोण।

"आग और संकल्प"

08 मई 2025 को 0330 बजे, फॉरवर्ड पोस्ट पर तैनात ग्रेनेडियर जावेद खान दुश्मन के जबरदस्त मोर्टार और मशीन-गन हमले की चपेट में आ गए। सटीक और केंद्रित मोर्टार फायर का निर्देश देते हुए, उन्होंने दुश्मन के ठिकानों को बेअसर कर दिया। इसके बाद, उन्होंने लगातार कई रातों तक समन्वित फायर मिशन चलाए, जिसमें उन्होंने क्वाडकॉप्टर की मदद से फायर में रियल-टाइम सुधार करते हुए 260 से ज्यादा राउंड फायर किए। पूरे ऑपरेशन के दौरान निगरानी तकनीक का इस्तेमाल निर्णायक साबित हुआ।

*- ग्रेनेडियर जावेद खान, भारतीय सेना **

"दुश्मन की नफरत को कुचलना"

08/09 मई 2025 की रात को एक ऊँचे पहाड़ी इलाके में, हवलदार बेन्डेन्ग नुक्षी ने अपनी टुकड़ी का नेतृत्व करते हुए दुश्मन के उन मजबूत ठिकानों पर हमला किया, जो उनके जिम्मेदारी वाले इलाके पर हावी थे। दुश्मन की लगातार निगरानी और गोलीबारी के बीच आगे बढ़ते हुए, वे अपने साथियों से आगे निकल गए ताकि एक खुले हुए फॉरवर्ड पोजीशन से सटीक जवाबी फायर का निर्देश दे सकें। दुश्मन की चौकियाँ बेअसर कर दी गईं और उन्हें छोड़ना पड़ा, जिससे हमारी समग्र ऑपरेशनल स्थिति और मजबूत हुई।

*- हवलदार बेन्डेन्ग नुक्षी, भारतीय सेना **

"आसमान के रक्षक की चौकसी"

08/09 मई 2025 की रात को, जब 2115 बजे तीन दुश्मन ड्रोन कोर मुख्यालय के करीब पहुँच रहे थे, तब कैप्टन सुधीर कुमार ने अपनी एयर डिफेंस गन टुकड़ी की जगह बदली और खुद गन का सीधा नियंत्रण संभाल लिया। तेजी से एक के बाद एक दो ड्रोन को नष्ट करने के बाद, उन्होंने तीसरे ड्रोन को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। इस तरह उन्होंने एक बेहद महत्वपूर्ण संपत्ति की रक्षा की - जो कर्तव्य-निष्ठा का एक शांत और प्रभावी प्रदर्शन था।

*- कैप्टन सुधीर कुमार, भारतीय सेना **

"रॉकेटों के तूफान में कायरों को भस्म करना"

08/09 मई 2025 की रात को, नांगी टेकरी में सूबेदार गिररिराज सिंह ने दुश्मन की लगातार जवाबी बमबारी के बीच एक मोर्टार पोजीशन की कमान संभाली। बार-बार खुद को दुश्मन की गोलीबारी के सामने खतरे में डालते हुए, उन्होंने सटीक जवाबी फायर का निर्देश दिया। इस फायर ने दुश्मन के मजबूत ठिकानों को नष्ट कर दिया और हमारी अपनी सेना पर हो रही गोलाबारी को कम कर दिया। उनके नेतृत्व ने सैनिकों में आत्मविश्वास जगाया और यह सुनिश्चित किया कि उनकी टुकड़ी अत्यंत गंभीर खतरे के बावजूद पूरी सटीकता और अनुशासन के साथ काम करे, और इस तरह उन्होंने भारतीय सेना की बेहतरीन परंपराओं को कायम रखा।

*- सूबेदार (ग्रेनेडियर) गिरिराज सिंह, भारतीय सेना **

(* नाम बदल दिए गए हैं)

मोर्चे से आवाजें : 09-10 मई 26

पारंपरिक युद्ध-पद्धति से तकनीक-आधारित युद्ध की ओर हुए बदलाव पर प्रत्यक्ष दृष्टिकोण।

"परगवाल का फायर असाल्ट: लॉन्चपैड को तबाह करना"

09 मई 2025 को 2155 बजे, चिनाब नदी के किनारे, मेजर साहिल शर्मा, एसएम ने अपनी कंपनी का नेतृत्व करते हुए पाक आइलैंड, पाक गिट्टी, कालियाल और तारिक में दुश्मन के लॉन्चपैड के खिलाफ एक जबरदस्त हमला किया। "अग्नि वर्षा" कोड के तहत, उनके सैनिकों ने सटीक मोर्टार और मशीन-गन से फायरिंग की, जिसने दुश्मन के ठिकानों को तबाह कर दिया और दुश्मन को अपनी पोस्ट छोड़ने पर मजबूर कर दिया। 10 मई तक, चारों पोस्ट नष्ट हो गए थे और दुश्मन को भारी नुकसान हुआ, जबकि हमारे सैनिकों को कोई नुकसान नहीं हुआ।

*- मेजर साहिल शर्मा, एसएम, भारतीय सेना **

"मोर्टार लाइन की कहानी"

09/10 मई 2025 की रात को गुगलधार में, दुश्मन की भारी आर्टिलरी बमबारी के बीच, लांस/हवलदार भूपिंदर सिंह ने लगातार धमाकों और उड़ते छर्रों के बीच अपनी मोर्टार पोस्ट पर डटे रहकर मोर्चा संभाला। दुश्मन के एक कमजोर ईंधन डिपो की पहचान करके, उन्होंने सीधी फायरिंग से एक सटीक हमला किया, जिससे वह लक्ष्य नष्ट हो गया और दुश्मन की हमला करने की क्षमता पंगु हो गई। अपनी सटीकता और युद्ध के मैदान में अपने पक्के इरादे से उन्होंने अपने साथियों की रक्षा की।

*- लांस/हवलदार भूपिंदर सिंह, भारतीय सेना **

"ट्रिगर पर उंगली"

09/10 मई 2025 को, आरएचएम (एआईजी) अंकुर ने सवाई नाला और सैयदना बिलाल आतंकवादी शिविरों पर सटीक हमलों का निर्देश दिया। उनके सटीक फायरिंग डेटा ने ऐसे विनाशकारी हमलों को संभव बनाया, जिन्होंने दुश्मन के मुख्य ठिकानों को बेअसर कर दिया। दुश्मन द्वारा जवाबी फायरिंग के प्रयासों के बावजूद, उन्होंने फायरिंग का तालमेल बनाए रखा, जिससे युद्ध के मैदान में हमारी लगातार बढ़त सुनिश्चित हुई और पहलगाम के लिए निर्णायक न्याय मिला।

*- आरएचएम (एआईजी) अंकुर, भारतीय सेना **

"नेतृत्वकर्ता का दिल"

09/10 मई 2025 की रात को 2330 बजे, भारी मोर्टार और तोपखाने की फायरिंग के बीच, सूबेदार राजिंदर कुमार ने लगातार गोलाबारी के साए में 800 मीटर का खुला मैदान पार करके अपने आगे तैनात सैनिकों को मदद पहुंचाई। वहां पहुंचने पर, उन्होंने सुरक्षा व्यवस्था को फिर से संगठित किया और समन्वित फायरिंग का निर्देश दिया, जिससे दुश्मन का एक थर्मल निगरानी टावर नष्ट हो गया। इससे दुश्मन की निशाना लगाने की क्षमता कमजोर पड़ गई और दुश्मन सेना को अपने ठिकाने छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा।

*- सूबेदार राजिंदर कुमार, भारतीय सेना **

(* नाम बदल दिए गए हैं)

ताकि हम भूल न जाएँ

अमर यादों की पहरेदारी

उस दुखद घटना को एक साल बीत चुका है, और अब पहलगाम में बलिदान को समर्पित एक स्थायी स्मारक स्थापित किया गया है। बैसरन घाटी में लिद्दर नदी के किनारे गर्व के साथ स्थित, काले संगमरमर से बना यह स्मारक अब उन लोगों की याद दिलाता है जिन्हें हमने खो दिया। यह स्मारक 26 लोगों के नामों को अमर करता है – जिनमें 25 पर्यटक और एक स्थानीय निवासी आदिल शाह शामिल हैं, जिनकी जीवन-यात्रा असमय ही समाप्त हो गई थी।

जानकारी के लिए संपर्क करें

प्रकाशकः स्ट्रेटजिक कम्युनिकेशन, रक्षा मंत्रालय (सेना), आईएचक्यू का अतिरिक्त महानिदेशालय

संपादक बातचीत ईमेलः editorbaatcheet@gmail.com

संपर्क नंबरः 011-23018665

प्रिंटरः एनीथिंग प्रिंटर, **फोनः** 011-45685718

BAATCHEET

Visit us at indianarmy.nic.in | @Indianarmy.adgpi | @adgpi | ADGPI-INDIANARMY | @Indianarmy.adgpi